वात्सल्यवारिधि आचार्यश्री

वर्धमानसागरजी महाराज जीवन परिचय

बिन्दु से सिन्धु तक का सफर करने वाले साधक की जन्मभूमि है, मध्यप्रदेश का प्राचीन गुलशनाबाद वर्तमान का सनावद । माता श्रीमती मनोरमा देवी एवं पिताश्री कमलचन्दजी की जीवन बगिया में १९ सितम्बर १९५०, भाद्रपद शुक्ला सप्तमी वीर संवत २००७ को खिला तेरहवां पुष्प । दशलक्षण महापर्व के उत्तम आर्जव धर्म के दिन पैदा हुए बालक को देखकर माँ खिलते-खिलते मुरझाये अपने बारह पुष्प-बारह सन्तानों के निधन की वेदना के घाव पर मरहम लगाकर, उनके दीर्घायु की कामना करने लगी । भविष्य में बालक, माता-पिता, समाज व गाँव के यश को वृद्धिंगत करेगा इससे अनभिज्ञ माता-पिता ने दुलार से नाम रखा यशवन्त । तेज ग्रहण शक्ति से यशवन्त स्कूल में अव्वल नम्बर से उत्तीर्ण होते रहे । अपने विवेकपूर्ण सौहार्दशील व्यवहार, सबके साथ बनती मेल-जोल से सबके लाडले बने रहे । खेलकूद में गोटी व गिल्लीडण्डा खेलने में बड़ी रुची थी यशवन्त को । शिक्षा और खेलकूद में दिलचस्पी रहने के बावजूद भी छठी कक्षा में पढ रहे यशवन्त ने बीमारी के बिछौने पर लेटी ममतामयी माँ की सेवा जीजान से की । किन्तु अपने बच्चों के लिए तड़पती माँ बच्चों को बिलखते छोड़कर सदा के लिए चल बसी ।

माँ के निधन पश्चात् यशवन्त पढाई खेलकूद के साथ पिताजी के काम में हाथ बँटाने लगे । छोटे भाई का ख्याल रखने लगे । चचेरे बड़े भैया मोतीलालजी के साथ मन्दिर व पाठशाला जाने लगे ।

आचार्यश्री महावीर कीर्तिजी व आचार्य श्री विमल सागरजी का दो मुनिराजों के साथ सनावद में पदार्पण से धर्मभावना बढती रही । पढाई के साथ-साथ धार्मिक भावना को बढावा मिलता रहा । माध्यमिक शिक्षा पूर्ण कर खण्डवा की कॉलेज में एडमिशन मिलने के बावजूद भी होस्टल के रेक्टर से माँस खरीदकर लाने के आदेश से तिलमिला गए, अहिंसा के पुजारी । दूसरे दिन सुबह पढाई छोड़कर वापस सनावद आकर बडवाह की डिग्री कॉलेज में भर्ती हो गए ।

सन १९६९ में वर्तमान सदी की श्रेष्ठ साध्वी, शताधिक ग्रन्थों की रचयित्री, हस्तिनापुर, जम्बूद्वीप की पावन प्रेरिका आर्यिका रत्न श्री ज्ञानमती माताजी ४ आर्यिका और २ क्षुल्लिका के साथ पधारी सनावद । माताजी के साथ विहार करके मुक्तागिरी क्षेत्र पर माताजी से ५ साल का ब्रह्मचर्य व्रत, बाद में सन् १९६८ में बागीदौरा में आचार्यश्री विमल सागर जी महाराज से लिया मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ।

घर वापस आकर कुछ दिन रुककर फिर पहुँचे आचार्यश्री शिवसागरजी के संघ में आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के पास । शास्त्रों के अध्ययन के साथ-साथ, मुनिचर्या को नजदीकी से निहारने का, संघ में साधुओं की वैयावृत्ति कर संघ का छोटा-बड़ा काम करने का मौका मिला ब्र.यशवन्त को । अपनी विनम्रता, औचित्यपूर्ण व्यवहार एवं अध्ययन में विशिष्ट रुचि रखने वाले ब्र. यशवन्त सबके प्रिय बने । प्रतापगढ में चातुर्मास पूर्ण कर महावीरजी में शान्तिवीर नगर में पंचकल्याणक हेतु पदार्पण किया । दूसरें के साथ यशवन्तजी ने आचार्य श्री से मुनिदीक्षा के लिए प्रार्थना की । इससे समस्त संघ मे आनन्द की लहर फैल गई । आनन्दातिरेक में मुनिश्री श्रेयांससागर ने यशवन्तजी को अपनी गोद में उठा लिया । आचार्यश्री शिवसागरजीने सुझाव दिया

ब्रह्मचारीजी आपने श्री सम्मेदशिखरजी की यात्रा नहीं की है तो आप सम्मेदशिखर की यात्र करके आईये, मुनि दीक्षा के बाद न जाने कब होगी यात्रा ? गुरु आज्ञा शिरोधार्यकर दूसरे दिन निकल पड़े श्री सम्मेदशिखरजी की वन्दना हेतु । उसी दिन दोपहर को अचानक आचार्यश्री शिवसागरजी की समाधि हो गई । यात्रा से आने के बाद दिनांक २४ फरवरी १९६९ को मुनिश्री धर्मसागरजी को आचार्यपद प्राप्ति होते ही उसी दिन उनके करकमलों से ११ दीक्षायें सम्पन्न हुई । इसमें सबसे छोटे थे ब्र. यशवन्तजी । नये स्वावलम्बी साधु जीवन में नाम मिला मुनिश्री वर्धमान सागर । श्री महावीर जी की धरा पर एक और वर्धमान ने जन्मलिया जो सदा होते रहे 'वर्धमान' ।

आहारचर्या में अन्तराय की बहुलता से कमजोर पड़े शरीर में व्याधिओं ने डेरा डाला, शरीर के व्यवधानों को नगण्य मानकर सहजता से उत्साहित रहे मुनिश्री वर्धमानसागरजी महाराज विहार में जयपुर खानियाँ जी में दृढ मनोबल के बावजूद भी ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी के दिन बेहोशी आ गई, थोडा होश आने पर पसलियों में जोरों का दर्द हुआ एवं तत्क्षण आँखों से दिखाई देना बिल्कुल बन्द हो गया । डॉक्टरों ने बताया कि एलोपैथीक दवाइयाँ और समय पर इलाज नहीं करवाया तो फिर उपचार भी अनुपयोगी साबित हो सकता है ।

आचार्य श्री धर्मसागरजी ने बताया कि मुनि अवस्था में रहकर एलोपैथिक नहीं दी जा सकती । पूरा संघ चिन्तित है क्या करें ? मुनिश्री वर्धमानसागरजी को परिषहजयी मुनिराजों का स्मरण आया । उन्होंने आचार्य श्री को बताया कि प्रसंग आने पर संल्लेखना ले लूँगा किन्तू मै इन्जेक्शन आदि नही लगवाऊँगा । अतः जिनालय में चन्द्रप्रभ भगवान के चरणों में नतमस्तक होकर शान्ति भक्ति - ''नं स्नेहाच्छरण प्रयान्ति भगवन्...'' का पाठ करना शुरु कर दिया । आचार्य श्री सहित संघस्थ सभी मुनिराज, आर्यिका माताजी, त्यागी, श्रावक आदि २४ घण्टे का नियम लेकर उच्चस्वर मे शान्ति भक्ति का पाठ करने लगे । तीन घण्टों की सामूहिक भक्ति से हुआ चमत्कार । मुनिश्री वर्धमानसागरजी महाराज की ५२ घण्टों की गई हुई नेत्र ज्योति ज्यों-की त्यों प्राप्त हुई. यह वही शान्ति भक्ति है जिसकी पूज्यपाद स्वामी ने आकाशमार्ग से गमन करते सूर्य की उष्णता से स्वयं की नेत्र ज्योति चली जाने पर रचना करते ही नेत्र ज्योति पुनः प्राप्त की थी ।

आचार्यश्री धर्मसागरजी महाराज की समाधि के पश्चात् आचार्यपद का भार श्री क्षेत्र केशरियाजी विराजित मुनिश्री अजितसागरजी के मजबूत कन्धों पर रखा गया । मुनिश्री वर्धमानसागरजी सीकर से बिहार कर २०-२२ साधु-साध्वीओं सहित पहुँचे मदनगँज । अपनी वैयावृत्य एवं वात्सल्य का परिचय संघस्थ सभीको करवाते चातुर्मास सम्पन्न हुआ मुनिश्री वर्धमानसागरजी का मदनगँज में । आचार्यश्री अजितसागरजी का आमन्त्रण मिलते ही मुनिश्री अपने साथ रहे संघको लेकर भींडर में विराजित आचार्यश्री के चरणों में पहुँचे । मुनिश्री वर्धमानसागरजी आनन्दाश्रुओं से आचार्य श्री के पादपद्मों का अभिषेक करते रहे । आचार्य श्री भी आपने स्नेह आश्रु बरसाते रहे अनन्य शिष्य पर । गुरु शिष्य का पावन मिलन बस गया उपस्थित सभी के अन्तर में ।

करीब तीन साल के सामीप्य में आचार्यश्री अजितसागरजी ने गूढ रहस्यों के साथ बहुत सारी ज्ञान की बातों से मुनिश्री वर्धमान सागरजी को अवगत कराया । मुनिश्री वर्धमानसागरजी आचार्यश्री अजितसागरजी को पिता तुल्यआदर देते हुए सेवा सुश्रूषा व वैयावृत्य में अग्रसर रहे ।

मुनिश्री वर्धमानसागरजी की तीक्ष्णबुद्धि, समर्पण भाव, निर्मल आगमोक्त आचरण,अनन्य गुरुभक्ति देवशास्त्र गुरु के प्रति असीम श्रद्धा, संघस्थ सभी के साथ वात्सल्यपूर्ण व्यवहार, वक्तृत्व कला, हृदय में भरी पड़ी संघ के साथ उत्थान की भावना ऐसे कुल मिलाकर सभी आयामों से ओजस्वी व्यक्तित्व को परखकर तथा अपनी अत्यधिक अस्वस्थता को देखकर अपने बादसंघ संचालन के लिए लिखित पत्र में यह आदेश दिया कि मै मेरी समाधि के बाद मुनिश्री वर्धमानसागरजी महाराज को आचार्यश्री शान्तिसागरजी महाराज की अक्षुण्ण आचार्य परम्परा का पट्टाधीश नियुक्त करता हूँ, मुनिश्री ने आचार्यश्री के चरणों में मस्तक झुकाकर प्रार्थना की आचार्य भगवन्त ! मै तो साधक ही ठीक हूँ, मेरे निर्बल कन्धों पर इतना भार क्यो डालते हो ? २४ जून १९९० आषाढ शुक्ला २ को राजस्थान के परसोला नगर में, आचार्यश्री पुष्पदन्त सागर जी के ससंघ सान्निध्य में मुनिश्री वर्धमानसागरजीको आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया । इस मंगल अवसर पर पिच्छिका भेजकर आचार्य विद्यानन्दजी ने अपनी स्नेह भावना प्रकट की, धार्मिक अनुष्ठान, प्रवचन, स्वाध्याय के माध्यम से महती धर्म प्रभावना के साथ प्रथम चातुर्मास पारसोला में पूर्ण हुआ ।

अतिशय क्षेत्र अहिंदा पार्श्वनाथ पर सम्पन्न हुआ दूसरा चातुर्मास । यहाँ से उदयपुर बिहार होते ही श्री निर्मल कुमारजी सेठी ने गिरनार आदि गुजरात के सिद्धक्षेत्रों की वन्दना कराने के भाव व्यक्त किये । श्री क्षेत्र तारंगाजीसे बिहार कर विजयनगर में आचार्यश्री की मनोभावना के अनुरूप ही समाचार आये कि कर्मयोगी भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी ने भावना व्यक्त की है की आगामी १९९३ के महामस्तकाभिषेक में चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शान्तिसागरजी महाराज की अक्षुण्ण आचार्य परम्परा के आचार्य श्री वर्धमानसागरजी के उपस्थिति अवश्यमेव होनी चाहिए । स्वामीजी का संदेश लाये श्री निर्मलकुमार सेठीजी और श्री नीरज जी । भगवान बाहुबली की मूर्ति के दर्शनोपरान्त महामस्तकाभिषेक में प्रधानाचार्य के रूप में सम्मलित आचार्य श्री वर्धमानसागरजी के दर्शन व आशीर्वाद प्राप्ति हेतु पधारे कर्नाटक के मुख्यमन्त्री, देश के राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री । एक ही मंच पर आसीन करीब ८० से अधिक साधु-साध्वीओं का परस्पर में वात्सल्य, एक ऐसी ऐतिहासिक घटना थी, जो आचार्यश्री वर्धमानसागरजीकी समदर्शिता, नम्रता और वात्सल्य की उपज रही । भट्टारक श्री चारुकीर्ति जी को भी आचार्य श्री वर्धमानसागरजी की सरलता, करूणा, सभी की राय लेकर सौहार्दपूर्ण व्यवहार भाया । यहाँ से मैसुर गोम्मटगिरी, हासन, शालीग्राम, कनकगिरि क्षेत्रों पर बिहार हुआ ।

Scanned with CamScanner

चरित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शान्तिसागरजी की परम्परा का हूबहू पालन करना आचार्यश्री वर्धमानसागरजी का मकसद रहा है । परम्परा को निभाने वाले वात्सल्यवारिधि आचार्यश्री वर्धमानसागरजी इतने खुले, इतने विशाल मना है, करूणा और वात्सल्य से ऐसे छलाछल भरे हुए हैं कि उनके सम्पर्क में आये जैन-अजैन उनके प्रशंसक भक्त बन उनसे बँध जाते है । फिर भी जलकमलवत् रहते आचार्यश्री है स्वात्मा में मगन । न नाम, न मान बस सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय-काम । इसलिए दिख रहे है आचार्य शान्तिसागरजी जैसे ।

कहीं दीक्षा संस्कार समारोह, कहीं पंचकल्याणक, कहीं बच्चों से लेकर बूढें तक की धार्मिक शिक्षण संस्कार शिबिर, कहीं विद्वत संगोष्ठी ऐसे जगह-जगह विधिवत आयोजन होते रहे आचार्य श्री इसमें सम्मिलित होकर मार्गदर्शन देते रहे ।

सन् २००६ में सम्पन्न भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव में सम्मिलित होने हेतु सन् २००४ में सलूम्बर (राज.) में आचार्यश्री से महोत्सव में सान्निध्य प्रदान करने हेतु प्रार्थना की गई । तदनुसार ४ दिसम्बर २००४ में आचार्यश्री ने ससंघ श्रवणबेलगोल की और मंगल बिहार किया । मार्ग में तीर्थो की वन्दना एवं गाँवो और नगरों में धर्मप्रभावना करता हुआ संघ मार्गस्थ अनेक प्रान्तों से गुजरता हुआ लगभग ७ माह के बिहार के पश्चात सन् २००५ के जुलाई माह में श्रवणबेलगोला पहुँचा । इस वर्ष के चातुर्मास के पश्चात सन् २००६ के फरवरी माह में सम्पन्न हुए भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक के आचार्यश्री एवं संघ के अतिरिक्त अन्य आचार्य संघ एवं लगभग २५० साधुवृन्द साक्षी बने । महोत्सव में तत्कालीन राष्ट्रपति-उपराष्ट्रपति तथा अनेकों प्रान्तीय राजनेताओं ने आचार्यश्री का मंगल आशीर्वाद प्राप्त कीया ।

श्रवणबेलगोल आकर सन् २००७ का वर्षायोग किया । चातुर्मास के अनन्तर आचार्यश्री ने तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी की वन्दना हेतु श्रवणबेलगोल से मंगल बिहार किया । श्रवणबेलगोल से सम्मेदशिखर तीर्थराज तक लगभग ३००० किमी. की सुदीर्घ यात्रा २२९ दिन में पूर्ण हुई । सन् २००८ का वर्षायोग तीर्थराज पर ही सम्पन्न हुआ । इस बीच अनेक कार्यक्रमों के साथ दीक्षा एवं सल्लेखना और तीर्थवन्दना भी संघ ने सम्पन्न की ।

२०१५ के चातुर्मास हेतु संघ ने किशनगढ से निवाई की तरफ विहार दिया, चातुर्मास की स्वीकृति मिलते ही निवाई नगर में हर्ष की लहर दौड़ उठी, कई वर्षो से सूखे पड़े कुँओं मे पानी आ गया । शुभ संकेतों के साथ चातुर्मास हेतु संघ का निवाई में १३ जुलाई को मंगल प्रवेश हुआ । १७ जुलाई को २६ वाँ आचार्य पदारोहण दिवस मनाया गया । धर्मनगरी निवाई में चातुर्मास के दौरान अभूतपूर्व धर्म प्रभावना हुई ।

इन्द्रध्वज विधान के समय २०१८ में सम्पन्न होने वाले भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक हेतु लगातार तीसरी बार आचार्य संघ को सान्निध्य प्रदान करने हेतु निमंत्रण आया । गणमान्य श्री अशोकजी पाटनी (आर.के.मार्बल) एवं एन.के.सेठी कार्याध्यक्ष जितेन्द्रजी, अशोकजी सेठी ने स्वामीजी द्वारा प्रदत्त निमंत्रण पत्र आचार्य श्री को भेट किया । सन् २००६ में संघपति के रूप में रहे श्रीमान हुलासजी सबलावत एवं श्रीमान कंवरलालजी (जयपुर) ने २०१८ में होने वाले महामस्तकाभिषेक के लिए भी आचार्य संघ को विहार कराने का संकल्प किया ।

१७ फरवरी २०१८ को महामस्तकाभिषेक महोत्सव के आरम्भ का शुभ दिन आया, बाहुबली भगवान के २००६ के बाद १२ वर्षों के अंतराल पश्चात् १:४५ पर भगवान के मस्तक पर से कलशों की धारा देखने को मिली, प्रथम कलश किशनगढ (राजस्थान) के आर. के. मार्बल्स परिवार द्वारा किया गया । दूध, हलदी, केसर, चन्दन, पुष्प आदि से पूर्ण पंचामृत अभिषेक देखकर प्रत्येक भक्त भगवान को हर्ष से निहार रहा था और कलशों की धार के साथ-साथ अपने कर्मो की धार को छोड रहा था ।

लगभग ३८० साधू एवं लाखों श्रावक जन साक्षात इस दृश्य के साक्षी बने । वहीं परम पूज्य वात्सल्य वारिधि आ. श्री. वर्धमान सागरजी महाराज का १९९३ व २००६ के बाद पुनः २०१८ में तीसरी बार प्रमुख सान्निध्य और क्षेत्र के भट्टारक श्री चारुकीर्ति स्वामीजी का प्रमुख निर्देशन रहा ।

आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज जी का संघ श्रवणबेलगोला से पुनः महावीर जी मस्तकाभिषेक में जाने के लिए जब निकला तो कोरोना के कारण अनायास ही अनेक स्थानों पर विश्राम करना पड़ा। संघ के वयोवृद्ध साधु के समाधि के लिए भी अनेक स्थानों पर रुकना पड़ा । अंततः ७ मार्च २०२२ को पूरा संघ भगवान राम हनुमान की मोक्ष भूमि श्री मांगीतुंगी जी सिद्ध क्षेत्र पर पधारे । जहाँ बड़ी भव्यता के साथ आचार्य श्री का दीक्षा दिवस मनाया गया । होली की पूर्णिमा पर यहाँ के मूलनायक विश्वहितंकर सातिशय चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का भव्य दिव्य मस्तकाभिषेक भी सम्पन्न हुवा।

१७ दिन के वास्तव्य में पूज्य श्री के वात्सल्य का अनुभव हुवा। इतने बड़े पद पर विराजमान होने के उपरांत भी सभी के प्रति वात्सल्य भाव एवं क्षेत्र विकास की भावना अनुकरणीय है। जो भी इनके पास आता है वह इन्ही का होकर रह जाता है। पंचम काल में इतनी कठोर साधना वास्तव में विज्ञान के लिए शोध का विषय हो सकता है। संघ का अनुशासन तो अत्यंत प्रशंसनीय है। सन्मति सेवा दल समिति ऐसे आचार्य परमेष्ठि के जीवन पर सन्मति प्रतियोगिता का वात्सल्य वारिधि विशेषांक निकालकर स्वयं को ही गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

पूज्य श्री के जीवन चरित्र से किसी भी एक भव्यात्मा को स्वयं के दर्शन हो जाए । तो भी हमारा यह अल्प प्रयास सार्थक सिद्ध होंगा ।

पूरा सन्मति परिवार ऐसे महान आचार्य श्री के चरणों में त्रिवार नमोस्तु प्रेषित करते हुवे। अपने आप को सौभाग्यशाली महसुस करता है।

प्राप्तांक : २५
प्रवेश शुल्क २५ रू.

गुरू उत्तर पुस्तिका अंक १९

अंतिम तिथि
15.10.2022

प्रतियोगी का पूरा नाम _____

पूरा पता – _____

गांव _____ तहसील _____ जिला _____

राज्य _____ पिनकोड _____ जन्म तिथि / /

मोबाईल नंबर _____

प्रश्न ०१	०१		०२		०३		०४		०५	
प्रश्न ०२	०१		०२		०३		०४		०५	
प्रश्न ०३	०१		०२		०३		०४		०५	
प्रश्न ०४	०१		०२		०३		०४		०५	
प्रश्न ०५	०१		०२		०३		०४		०५	

व्हॉटसॅप करने की जानकारी

इसका फोटो निकालकर 9421443513 पर भेजे । संलग्न ४० रु प्रवेश शुल्क भेजने का स्क्रिन शॉट भी भेजे।

उत्तर पुस्तिका भेजने का पता

सन्मति प्रतियोगिता
मेन रोड, मांगीतुंगी तह. सटाना
जिला नासिक महा. ४२३३०२

Scanned with CamScanner

प्राप्तांक : २५
प्रवेश शुल्क २५ रू.

गुरू प्रतियोगिता अंक १९

अंतिम तिथि
15.10.2022

प्रश्न ०१ : सलग्न प्रेषित आचार्य श्री वर्धमान सागरजी महाराज के जीवन चरित्र से उत्तर लिखे...

०१.	आ.श्री वर्धमान सागरजी की दीक्षा कौनसे आचार्य से होने वाली थी ?	०१. आ.धर्मसागरजी
०२.	आ.श्री वर्धमान सागरजी कौनसे आचार्य की परंपरा का निर्वहन कर रहे है ?	०२. आ.विमलसागरजी
०३.	आ.श्री वर्धमान सागरजी ने जन्मभूमि पर सर्वप्रथम किनके दर्शन किये ?	०३. आ.महावीरकीर्तिजी
०४.	आ.श्री वर्धमान सागरजी की दिक्षा कौनसे आचार्य द्वारा हुई ?	०४. आ.ज्ञानमतीजी
०५.	आ.श्री वर्धमान सागरजी ने आजीवन ब्रह्मचर्य के व्रत किनसे ग्रहण किये ?	०५. आ.शिवसागरजी
		०६. आ.शान्तिसागरजी

प्रश्न ०२ : पंचम काल का चमत्कार आचार्य श्री के जीवन मे घटीत हुआ आये जानते है...

०१.	आ.श्री वर्धमान सागरजी की नेत्र ज्योती चली गई तब उनकी आयु कितनी थी ?	०१	११
०२.	आ.श्री वर्धमान सागरजी की नेत्र ज्योती कितने घंटो के लिए गई थी ?	०२	४८
०३.	आ.श्री वर्धमान सागरजी के दिक्षा समय कुल कितनी दिक्षाये सम्पन्न हुई ?	०३	१९
०४.	आ.श्री वर्धमान सागरजी की नेत्र ज्योती जाने पर संघ द्वारा शांतिभक्ति के पाठ का संकल्प कितने घंटे का किया गया ?	०४	५२
०५.	अंतराय की बहुलता से जेष्ठ मास की कौनसी तिथि को आचार्यश्री बेहोश हो गये ?	०५	२४
		०६	५

प्रश्न ०३ : आचार्य श्री के जीवन को परीवर्तीत कराने मे इनका बडा योगदान है वे कौन पहचानिये...

०१.	आ.श्री वर्धमान सागरजी महाराज का जन्म नाम...	०१. शिवसागरजी
०२.	आ.श्री वर्धमान सागरजी के पूज्य पिताश्री का नाम...	०२. विमलसागरजी
०३.	आ.श्री वर्धमान सागरजी के पूज्य माताजी का नाम...	०३. ज्ञानमती जी
०४.	आ.श्री वर्धमान सागरजी को धर्ममार्ग पर लाने वाली माँ...	०४. यशवंतजी
०५.	ब्रह्मचर्य अवस्था मे प्रतापगढ मे कौनसे संघ मे गये...	०५. कमलचंदजी
		०६. मनोरमादेवीजी

प्रश्न ०४ : आचार्य श्री के जीवन मे घटीत यह अनमोल वर्षो की जोडी बनाये...

०१.	पहला १२ वर्ष का मस्तकाभिषेक आचार्यश्री के सानिध्य मे कब हुआ	०१. १९६९
०२.	आचार्यश्री का सम्मेदशिखजी का चार्तुमास कब सम्पन्न हुआ	०२. २०१२
०३.	आचार्यश्री धर्मसागरजी महाराज को आचार्य पद कब प्राप्त हुआ	०३. १९९३
०४.	आचार्यश्री वर्धमानसागरजी को आचार्य पद कब प्राप्त हुआ	०४. २००८
०५.	आचार्यश्री के कौनसे वर्ष के चार्तुमास मे सूखे कुँओं मे पानी आ गया	०५. १९९०
		०६. २०१५

प्रश्न ०५ : आचार्य श्री के चरणों मे समर्पित श्रावक श्रेष्ठी को पहचाने और जोडी बनाये...

०१	२००६ मे मस्तकाभिषेक के समय आचार्य श्री के संघपती का नाम	०१	अशोककुमारजी
०२	प्रथम मस्तकाभिषेक का अमंत्रण लेकर आये उनके सहयोगी का नाम	०२	निर्मलकुमारजी
०३	बचपन मे आचार्यश्री को मंदिर और पाठशाला लेकर जाते थे वे...	०३	ताराचंदजी
०४	तीसरी बार मस्तकाभिषेक का आमंत्रण लेकर आये उनका नाम...	०४	मोतीलालजी
०५	आचार्य पदारोहण के बाद गिरनार की यात्रा करवाने वाले संघपती	०५	नीरजजी
		०६	हुलासचंदजी

: प्रवेश शुल्क :

- उत्तर पत्रिका ऑनलाईन सबमिट करने पर : २५ रू.
- डाक द्वारा उत्तर पत्रिका भेजने पर : ३० रू.
- व्हॉटसॅप पर उत्तर पत्रिका का फोटो निकालकर भेजने पर : ४० रू.

Whatsapp No : 9421443513

Pay tm, G Pay, Phone Pay : 9421443513

ऑनलाईन पत्रिका जमा करने के लिए अपने मोबाईल में प्ले स्टोर पर SANMATI टाईप करके एप्लीकेशन डाऊनलोड करे। **स्क्रीन शॉट अवश्य भेजे।**

Scanned with CamScanner